शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इन्दौर के नगरीय व शहरी विकास के लिए पेट्रिक गिडीज द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ.अभिलाषा धाण्डे
रेनेसां लॉ कॉलेज
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

इन्दौर नगर के विकास एवं नगर नियोजन की दिशा में वर्तमान में किये जा रहे प्रयास तो सराहनीय हैं ही, परन्तु आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व होल्कर शासन द्वारा भी इस दिशा में काफी प्रयास किये गएँ थे। होलकर शासन द्वारा नगर नियोजन एवं विकास हेतु एक विशेषज्ञ पेट्रिक गिड़ीज की सेवायें ली गई। उन्हें इन्दौर नगर नियोजन एवं शहरी विकास पर अध्ययन एवं विश्लेषण कर एक रिपोर्ट देने को कहा गया। उनके द्वारा सन् 1918 में प्रस्तुत रिपोर्ट इतनी प्रासंगिक और उच्च स्तरीय थी कि ऐसा प्रतीत होता है मानो आज नगर नियोजन एवं विकास हेतु किये जा रहे प्रयासों को पेट्रिक गिडिज ने 100 वर्षों पूर्व ही सोच लिया था। प्रस्तुत शोध पत्र में पेट्रिक गिड़िज द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य बिंदु: *नगर नियोजन, शहरीकरण, पेट्रिक गिडिज की रिपोर्ट।*

प्रस्तावना

वर्तमान काल में इन्दौर शहर ने एक बड़े महानगर का रूप ले लिया है। शहर के सुव्यवस्थित व सुनियोजित विकास के लिए सरकार द्वारा इसे स्मार्ट घोषित किया जा चुका है। शहर को स्मार्ट सिटी बनाने के लिए स्थानीय नगर पालिका निगम द्वारा भी सड़कों के चौड़ीकरण, कान्ह एवं सरस्वती नदी की सफाई, सड़कों की नियमित सफाई, शहर के प्रेक्षणीय स्थलों के सौन्दर्यीकरण आदि प्रयास किए जा रहे हैं। प्राचीन इन्दौर के नगरीकरण के लिए आवश्यक प्रयास तत्कालीन होलकर के शासनकाल से ही प्रारंभ हो चुके थे।

इन्दौर नगर के विकास की भावी संभावना के प्रति होलकर महाराज बहुत आशान्वित थे। 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में ही उन्होंने इस दिशा में प्रयास प्रारम्भ कर दिये थे। विकास की सम्भावना तलाशने के लिए होलकर राजा ने प्रसिद्ध नगर नियोजन विशेषज्ञ पेट्रिक गिडिज से सम्पर्क कर उन्हें इन्दौर नगर नियोजन एवं शहरी विकास की सम्भावना तलाशकर उस पर प्रारूप तैयार करने हेतु कहा गया। इस परिप्रेक्ष्य में पेट्रिक गिडीज ने नगर के विकास की संपूर्ण संभावनाओं का विस्तृत अध्ययन करने के पश्चात् अपना प्रतिवेदन होलकर दरबार को सन् 1918 में प्रेषित किया। पेट्रिक गिडिज ने इंदौर और मालवा की भौगोलिक परिस्थिति को ध्यान में रखकर बहुत सुन्दर योजना की थी जिसमें सभी प्रकार की सुविधाओं का पूरा ख्याल रखा गया था।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य इन्दौर नगर के नगर नियोजन एवं शहरी विकास हेतु प्रस्तुत

पेट्रिक गिडिज की रिपोर्ट का विस्तृत अध्ययन कर विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत करना है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। शोध पत्र पेट्रिक गिड़िज की रिपोर्ट का विस्तृत अध्ययन कर विश्लेषण किया गया है।

इन्दौर नगर के औद्योगिक क्षेत्र के विस्तार के महत्व को दर्शाते हुए पेट्रिक गिडिज ने लिखा है "इन्दौर जो कि एक विकासशील नगर है अपनी प्रारंभिक विकासवादी अवस्था में औद्योगीकरण से उत्पन्न बुराईयों से सुनियोजित औद्योगिक योजना द्वारा बच सकता है। नवीन औद्योगिक बस्ती के लिए नगर का उत्तरपूर्व क्षेत्र तथा रेल्वे एवं न्यू देवास रोड़ के मध्य का क्षेत्र सर्वश्रेष्ठ है।"

पेट्रिक गिडीज द्वारा प्रस्तुत 408 पृष्ठों की यह रिपोर्ट 2 जिल्दों में प्रकाशित की गई है। प्रथम जिल्द को 12 भागों में बांटा गया है, जबकि दूसरी जिल्द में कुल 8 भाग हैं। इन दोनों भागों में क्रमशः 42 तथा 43 अध्याय है।

प्रथम जिल्द में 12 भाग है जिसका विस्तृत विश्लेषण इस प्रकार है -

1. प्रथम भाग में 3 अध्याय है जिसमें इन्दौर नगर की प्रारंभिक अवस्था, किए गए विभिन्न सर्वेक्षण और तत्कालीन इन्दौर की स्थिति का वर्णन किया गया है।

2. द्वितीय भाग में चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत औद्योगिक युग में जन स्वास्थ्य की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। इसके अंतर्गत सामान्य एवं कुछ विशिष्ट रोग जैसे टी.बी. प्लेग आदि से निपटने के लिए उपलब्ध चिकित्सा सुविधाओं का उल्लेख किया गया है।

3. तृतीय भाग में 5वें अध्याय में क्षेत्रीय ग्रामीण एवं नगरीय उद्योगों विशेषकर सूती एवं रेशमी वस्त्र उद्योग की तत्कालीन स्थिति एवं भावी संभावनाओं का वर्णन किया गया है। 6वें अध्याय में सूती मिल क्षेत्रों के विस्तार की योजना को नए औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित करने की रूपरेखा दी गई है।

4. चतुर्थ भाग में इन्दौर नगर में जल आपूर्ति के विभिन्न स्रोतों, सिंचाई हेतु तालाबों, जलस्तर को बनाए रखने हेतु आवश्यक उपायों तथा नए जल स्त्रोतों को विकसित करने की अनुशंसा की गई है।

5. पांचवे भाग में 8वें अध्याय के अंतर्गत जलनिकासी की तत्कालीन व्यवस्था का आलोचनात्मक विश्लेषण तथा नगर को स्वच्छ रखने हेतु प्रस्तावित जल निकासी व्यवस्था को सुविचारित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

6. छठे भाग में 9 से 13 तक के अध्यायों का वर्णन है। नवें अध्याय में प्लेग कैम्प एवं उनकी संभावनाओं भूमि बंदोबस्ती योजना एवं सामुदायिक व्यवस्था की योजना को प्रस्तुत किया गया है।

सूती वस्त्र उद्योग में कार्यरत कर्मचारियों की आवास समस्याओं एवं उनके समाधान हेतु सुझाव 10वें अध्याय में प्रस्तुत किए गए हैं। अन्य तीनों अध्यायों में उपनगरीय योजना का विस्तृत वर्णन किया गया है।

7. सातवें भाग में 10 अध्याय हैं। इसमें बोलिया छत्री, तोपखाना तुकोगंज, पलासिया एवं अन्य क्षेत्रों में बगीचों के विकास की संभावना को तलाशा गया तथा खाली पड़े क्षेत्रों का उचित उपयोग करने की अनुशंसा की गई है। नगर निवासियों के मनोरंजन हेतु मनोरंजन स्थलों के विकास जैसे प्राणी संग्रहालय, क्लब एवं खेल मैदानों के विकास की भी सलाह दी गई है। साथ

ही नगर में शैक्षणिक सुविधाओं के विकास की योजना भी प्रस्तावित की गई है।

8. आठवें भाग में 4 अध्याय हैं, जिनमें इन्दौर सिटी क्वार्टर्स के विकास को साकार करने की योजना प्रस्तावित की गई है। सियागंज, रानीपुरा, जूनी इन्दौर, रिव्हर साईड रोड़ और उससे लगे क्षेत्रों के आधुनिक विकास हेतु योजना प्रस्तुत की गई है।

9. नवें भाग में 3 अध्याय है जिसमें नगर में शिक्षा की स्थिति का वर्णन किया गया है। पेट्रिक गिडिज ने अपनी रिपोर्ट में शिक्षा के विकास के लिए ओपन एयर स्कूल की आवश्यकता पर भी बल दिया है।

10. दसवें भाग में 6 अध्याय है जिनमें पुनः सिटी क्वार्टर्स के विकास की योजना को अलग-अलग हिस्सों में प्रस्तुत किया गया है। 31वें अध्याय में आड़ा बाजार के चौड़ीकरण एवं विस्तारीकरण से होने वाले खतरों की ओर भी इशारा किया गया हैं। 32वें अध्याय में पूर्व की शहरी योजना की आलोचना और उसके स्थान पर वैकल्पिक योजना प्रस्तुत की गई है।

11. 11वें भाग में सफाई और जल निकास व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है। इस भाग में पूर्व की सफाई व्यवस्था की कमियों का उल्लेख करते हुए प्रस्तावित ड्रेनेज योजना की स्थापना हेतु सुझाव दिए गए है। साथ ही इसकी स्थापना में आने वाली कठिनाईयों एवं इस हेतु आवश्यक उपचार भी इसी अध्याय में उल्लेखित है।

12. 12वें व अंतिम भाग में रेल्वे स्टेशन और उसके आस-पास की बस्तियों में सराय और होटल स्थापित करने की योजना के बारे में बताया है। नगर के पश्चिमी भाग में सेना के बैरक और उनके संभावित उपयोगों को भी अंतिम 42वें अध्याय में उल्लेखित किया गया है।

पेट्रिक गिड़िज द्वारा 'द दरबार ऑफ़ इन्दौर' को नगर नियोजन के संदर्भ में प्रस्तुत की गई रिपोर्ट की दूसरी जिल्द में कुल 8 भाग हैं। इस जिल्द में नगर में शैक्षणिक, प्रशासनिक, स्वास्थ्य आदि सेवाओं के विकास एवं विस्तार हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए है।

1. प्रथम भाग में कुल 16 अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में भारत और यूरोप में स्थित नए व पुराने विश्वविद्यालयों की संक्षिप्त जानकारी दी गई है। द्वितीय अध्याय में विश्वविद्यालयों की वर्तमान स्थिति संभावित सुधारों एवं उनके परिणामों की व्याख्या की गई है। तृतीय अध्याय में युद्धकाल के पश्चात् विश्वविद्यालय की पुनः संरचना पर प्रकाश डाला गया है। पांचवें अध्याय में केन्द्रीय पुस्तकालय, संग्रहालय एवं थियेटर की सामान्य प्रस्थिति एवं उनकी स्थापना के लिए सुझाव दिए गए है। छठे, सातवें एवं आठवें अध्याय में इतिहासकारों का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण, कला संकाय का प्रयास, ओपन एयर थियेटर एवं जिम्नेशियम आदि सुविधाओं के विश्लेषण के साथ-साथ उच्च शिक्षा एवं प्रौढ़ शिक्षा के प्रति विस्तृत दृष्टिकोण दर्शाया गया है। ग्यारहवें अध्याय में एक रचनात्मक सुझाव के रूप में स्कूल ऑफ़ म्युजिक की स्थापना का भी सुझाव दिया गया है। चौदहवें व पन्द्रहवें अध्याय में नए विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए वर्तमान दशाओं एवं आवश्यक सुविधाओं को सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया गया है। यूनिवर्सिटी रिपोर्ट यद्यपि अपूर्ण थी परन्तु उसके कुछ निष्कर्षों और उस पर आधारित संभावनाओं को 16वें अध्याय में उल्लेखित किया गया है।

2. द्वितीय भाग में विभिन्न कार्यों के संबंध में पूर्वानुमानों के बारे में लिखा गया है। सत्रहवें अध्याय में पूर्वानुमानों की प्रारंभिकी और उसकी

दिशा एवं कठोर अर्थव्यवस्था हेतु अपील की गई है। अठारहवें अध्याय में नगर में जल-मल निकासी की यथोचित व्यवस्था हेतु तथा उन्नीसवें अध्याय में पुराने नगर के विकास के लिए विभिन्न योजना संबंधित पूर्वानुमान भी लगाए गए है। इस भाग के अन्य अध्यायों में विभिन्न उद्यानों, वैज्ञानिक संस्थाओं, पुस्तकालयों, संग्रहालयों आदि के विकास हेतु योजनाओं को प्रस्तुत किया गया है।

3. तृतीय भाग में 26वें अध्याय के अंतर्गत नगर-नियोजन के प्रविधि एवं प्रशासन हेतु आवश्यक सुझाव दिए गए है। इसके अंतर्गत सिटी इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट की स्थापना एवं इंग्लैण्ड में टाऊन प्लानिंग मूवमेंट आदि विषयों को रेखांकित किया गया है।

4. चतुर्थ भाग में नगर के पुराने भाग में आवास एवं स्वच्छता हेतु व्यवस्था पर बल दिया गया है। 30वें अध्याय में औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना के लिए आवश्यक सुविधाओं जैसे- जलप्रदाय, विद्युत प्रदाय, जलनिकासी हेतु नालियों की उचित व्यवस्था आदि को उल्लेखित किया गया है।

5. पांचवें भाग में इन्दौर नगर के लिए जन स्वास्थ्य एवं उसके आर्थिक मूल्य को मुख्य रूप से रेखांकित किया गया है साथ ही 35वें अध्याय में शिशु मृत्यु एवं उसके बचावों, टी.बी., हैजा, मलेरिया, खसरा, आदि बीमारियों से होने वाले परिणामों एवं उसके बचाव हेतु आवश्यक उपाय करने पर जोर दिया गया है।

6. छठे भाग में दो अध्याय के अंतर्गत जनसहयोग की अपेक्षा की गई है। साथ ही नागरिकों से स्वविकास हेतु सहकारिता क्षेत्र के विकास में अधिकाधिक योगदान की अपेक्षा की गई है।

7. सातवें भाग में इन्दौर नगर को एक राज्य एवं राजधानी के रूप में विकसित करने की योजना प्रस्तुत की गई है साथ ही छोटे राज्य स्थापना से होने वाले लाभों एवं उसमें आने वाली कठिनाईयों का उल्लेख किया गया है।

8. आठवें और अंतिम भाग में नगर-नियोजन के आवश्यक तत्वों उसकी कार्य सूची एवं सम्पूर्ण रिपोर्ट के निष्कर्षों को सारांश रूप में प्रस्तु किया गया है।

निष्कर्ष

पेट्रिक गिडिज द्वारा नगर नियोजन एवं विकास हेतु प्रस्तुत की गई यह रिपोर्ट अत्यंत सराहनीय थी तथा इससे प्रभावित होकर तत्कालीन होलकर शासन ने पेट्रिक गिडिज की रिपोर्ट के आधार पर सन् 1924 में सिटी इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट की स्थापना की। इस हेतु एक अधिनियम होलकर सरकार द्वारा पारित किया गया जिसमें विभिन्न क्षेत्रों कों प्रतिनिधित्व देते हुए आठ सदस्यीय ट्रस्ट की स्थापना की गई जो कि इन्दौर नगर के नगरीय विकास की दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुआ।

संदर्भ ग्रन्थ

1. गिडिज पेट्रिक; टाउन प्लानिंग टू वर्ड्स सिटी डेवलपमेंट, ए रिपोर्ट टू द दरबार ऑफ़ इन्दौर, 2 जिल्द सन् 1918

2. होलकर राज्य द्वारा प्रकाशित ए समरी ऑफ़ द रिफोर्म्स एंड इम्प्रूवमेंट्स इंट्रोड्यूस्ड इन द होलकर स्टेट, 1919 से 1925 ई.